

उँ आः हँ ॥ मद्यया लोभन ॥ उँ हः क्षः क्षीः अः स्वाहा ॥ अमृत
 न्यास ॥ ॥ उँ अमृतं अमृतं संकृतं ॥ नदहि अमृतं प्रवेष्टुं यदी
 हँ ॥ हः काय हवनं वक्तुं ॥ हां काय गन्धनामनं ॥ क्षीः काय वीर्यहन्ताः
 व ॥ अमृतं काय हवनं वक्तुं ॥ ॥ यथ्य न्यास ॥ नमो रुग वनं वा वलीः
 अमृतं क्षीः स्वाहा ॥ ॥ यथ्य न्यास ॥ नमो रुग वनं वा वलीः
 ॥ ॥ नो लनील शरी लोका अक्षय संग संगिनी ॥ रुखा हं वामः

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1.442 I

हावायं अक्षयारुवमामकी ॥ ॥ उं संरुनिश्कंरुट् ॥ गृह्णश्कंरुट्
गृह्णायश्कंरुट् ॥ अन्नयक्ष ४ रुगवनविद्यावाज्कंरुट् ॥ ॥ यवा
दिगकाकास्या ॥ उरुव उवकास्या ॥ यश्चिम ग्वा नास्या ॥ दक्षिण शुक्
नास्या ॥ अग्रयकान यमजारी ॥ नेमुख यमदूनी ॥ वायुय यमदृष्टी ॥
नेशांन यममथनी ॥ ॥ उं मेदनीवजीरुववज्जव न्वरु ॥ उं वज्जया
काव रुवंरु ॥ उं वज्जयज्जलरुयंरु ॥ उं वज्जविगानरुखंरु ॥ उं वः

जसवज्जलशंसर्ग ॥ वज्जकालानलाक्कंरु ॥ ॥ उं घट्टघाटयश्मः
वृद्धयान् रुंरुट् ॥ उं कीलयश्मव्यायानयनय रुंरुट् ॥ उं रुंश्चज
कीलयश्चज्जवो अक्षययति सर्वविद्यानां कायवाग्विरुवज्जकीन
यश्चरुंरुट् ॥ उं वज्जमूनलावज्जकीलय माकाटय माआकाटय रुंरुट्
महासूखंरावयन ॥ ॥ नूनिनिविष्टंरावयन ॥ ॥ उं वज्जहमेरुं ॥
यूं सिवसि ॥ जां गिरायो ॥ उं दहिषक ॥ ॥ आं यष्टवंग ॥ (मः)

वा म क र्त्तु ॥ नां कु म ध ॥ यं च रु धा ॥ मां वा रु म ल था ॥ कां कं द था ॥
 डां रु न द ॥ सिं ना री ॥ कां ना गिका य ॥ कं व रु ॥ लं क ण ॥ का
 दि दि ॥ दिं म द ॥ यं लिं ग ॥ गुं गु व द ॥ सां उ व द ॥ सिं अं द्राः
 यां ॥ नं या द था ॥ सिं या द दृ ष्ट ॥ मं गु ष्ट ॥ कूं जा न द ॥ यी ॥ य यी ॥
 द्वा य क र्त्तु ॥ द्वा य क र्त्तु ॥ मं ला य का य ॥ मं ला य क ॥ मं ला ना य ग
 मं ला न ॥ स द्वा दि क्ति क र्त्तु का व द मि ॥ मू द्वा मं द्वा र्थ ॥ अ क नि ष्ट उ व न

[illegible]

ॐ लामाय हूं २ रुट् ॥ ॐ सखु बाह हूं २ रुट् ॥ ॐ वृषिणीय हूं २ रुट् ॥
युवादिदि ह् ॥ ॥ ॐ वज्रक बाठक हूं २ रुट् ॥ ॐ समय क बाठक हूं २
रुट् ॥ ॐ विस्मय क बाठक हूं २ रुट् ॥ ॐ समये विस्मय क बाठक हूं २
रुट् ॥ विदिग ह् ॥ ॐ निविह चक् ॥ ॥ ॐ कव २ वचन हूं २ रुट् ॥
ॐ कव २ वचन कीलिय हूं २ रुट् ॥ ॐ वच २ वचन मनीय हूं २ रुट् ॥ ॐ
गमय २ मराना (ग हूं २ रुट् ॥ दि ग ॥ ॥ ॐ क्षारय २ विवमनी :

य हूं २ रुट् ॥ ॐ क्षा २ वचनीय हूं २ रुट् ॥ ॐ हव २ लंक वचनीय हूं २ रुट् ॥
ॐ ह २ म चय हूं २ रुट् ॥ विदि (ग ॥ ॥ ॐ निवा क चक् ॥ ॥
ॐ ह २ वचनीय हूं २ रुट् ॥ ॐ ह २ म ह २ ल वीय हूं २ रुट् ॥ ॐ
ॐ य २ वायु व (ग हूं २ रुट् ॥ ॐ क २ व स वधि न क माला व ले नि न
स वारु कि य हूं २ रुट् ॥ युवादिदि ह् ॥ ॥ ॐ ग ह् २ म य या न वः
ग क उ जं ग य य म्वा ग ह् २ य २ ग्या मा द वी य हूं २ रुट् ॥ ॐ आ क ह् २ :

ॐ रुद्र ह्रीं रुद्र ॥ ॐ कीं रुद्र यक (ॐ ह्रीं रुद्र ॥ ॐ ह्रीं रुद्र खग नमः
ह्रीं रुद्र ॥ विदिह ॥ ॥ ॐ तिका यचक ॥ ॥ ॐ कीं रुद्र वग
ह्रीं रुद्र ॥ ॐ कीं रुद्र खग नमः ह्रीं रुद्र ॥ ॐ कीं रुद्र सोमिनी य ह्रीं रुद्र ॥
ॐ ह्रीं रुद्र वमनी य ह्रीं रुद्र ॥ पूर्वदिदिह ॥ ॥ ॐ किनि रुद्र वि
ह्रीं रुद्र ॥ ॐ सिनि रुद्र मदा वल ह्रीं रुद्र ॥ ॐ हिनि रुद्र वलिनी
य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ धिनि रुद्र मदा वीर्य ह्रीं रुद्र ॥ विदिह ॥ ॥ वाय ॥ ॥

ॐ काकास्य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ उलकास्य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ ग्वातास्य ह्रीं रुद्र ॥
ॐ रुद्रास्य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ तिदिग वाय ॥ ॥ ॐ यमठाठी य ह्रीं रुद्र ॥
ॐ यमहमी य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ यमदधुनी य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ यममथनी य ह्रीं रुद्र
ॐ तिदिदिग ॥ ॥ ग्वातास्य ॥ ॐ वा (ॐ वा य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ गदाला
य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ दाली कला य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ कवकरी य (ॐ ह्रीं रुद्र ॥
दिग ॥ ॥ ॐ अरुद्रास्य ह्रीं रुद्र ॥ ॐ लक्ष्मी वरुद्रास्य ह्रीं रुद्र

ॐ ॥ उं लक्ष्मी वरुण कृष्णाय नमः ॥ उं धाता नमः ॥
उं किलिक लाय नमः ॥ विदिक ॥ ॐ नित्य न्याग विधि ॥
उं सुललित विलासन मामिने ॥ उं वंदना ॥ कृष्णमांजलीनाथदावः
जय ययनीष्ट सादा ॥ ॥ यथायदा व पूजा ॥ उं वज्रगन्ध सादा ॥ उं
वज्रसिंहाय सादा ॥ उं वज्रपूषा सादा ॥ उं वज्रधूय सादा ॥ उं वज्रदी
य सादा ॥ उं वज्रनेत्रय सादा ॥ ॥ लास्या ॥ ॥ उं वज्रसत्त्व संयः

दात्मकं ॥ वज्रवत्तमनूरुवं ॥ वज्रधर्मगयिन ॥ वज्रकर्मकृत्ताहव ॥
उं वज्रवीन्यहं ॥ वज्रवंगेशं ॥ वज्रमृदंगद्वी ॥ वज्रमृदुजं अ ॥ वः
जहास्यहं ॥ वज्रमालेशं ॥ वज्रगीतद्वी ॥ वज्रनृत्य अ ॥ वज्रपूषा
हं ॥ वज्रधूयशं ॥ वज्रलाकद्वी ॥ वज्रगन्ध अ ॥ वज्रवसाहं ॥ वज्र
वस्यशं ॥ वज्रययंद्वी ॥ वज्रधर्म अ ॥ नमस्तुहं नमामिहं नमान
म ॥ ॥ उं हं सादा ॥ वज्र ॥ उं हं ॥ सादा ॥ घं ॥ उं हं ॥ हं ॥

घण्टं वादुनमुनि ॥ कृत्वलयदलनीजीमरुमा लावलंथामनीलं ।
महावायु वेगवानवाहामहामेधनीमणु लोधसु दमावल मायवीसुः
नयमासनासीनमाकारं सर्वोत्तमान् । समावृट (गोवीसु दमा न्याति
नायलु सूर्यचन्द्रादि दवाक वेवद्विने । जामिग नक दोत्या करं लाकर
का करं सर्वगं कादवं व्याघ्रचर्ममिव दं द्रुक्षु वंद्रुक्षु धीवग मीव रं कावः
दं काव हाहाव वायुर्ह सच्चमिव । विष्वक्कादचन्द्राक गत्सक वंश

वंधसुमाहा न्यकावंसुगावमहागंशव हाव । दवद घंमना (थात्तयः
दादय (मायगु हादयहा न गून्यसु हा वाहना लिंग नम रुमानं गजच
मा मव वंशय रु सुधय विस्व वयव लुगु लाय क र्ति दल द्रुक्षु द्वाहायाः
(गोत्तगु व द्वा म (लु । कृयो ट नया रु हाचय मु व र्ति रु उ ४ (गो रु मानं म
हामासिमदापिनं धापिनं मोनिनं रु निनं निधीधने धाटगा द्वा द्वा व रु
निनं य विरु न मु वली रु यनं ली य रं ला य रं धाव संसा व का गा

[illegible]

अथ वक्रयमायत्रि वक्रवावाहिं आत्मानं वयम् ॥ यथान्यासः ॥ ॐ :
 वं वक्रवावादीयं हं २ रुट् ॥ ॐ हा यां यामिनीयं हं २ रुट् ॥ ॐ डी मां माहनीयं
 हं २ रुट् ॥ ॐ डीं डीं संवालिनीयं हं २ रुट् ॥ ॐ हं हं संवा मनीयं हं २ रुट् ॥
 ॐ रुट् रुट् वृणीकायं हं २ रुट् ॥ ॥ ॐ हं हं स्वाहा ॥ ॐ नमो हि स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा
 हं स्वाहा ॥ वा वट्ट स्वाहा ॥ हं २ हा स्वाहा ॥ रुट् २ स्वाहा ॥ ॥ यथा यथा वयम्
 जा ॥ न यति ॥ ॐ अ अ ॐ ॐ ॐ उ उ म म ॐ ॐ न न उ उ अ अ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥

युजाश्रुति ॥ पुन्यता कवृणा त्मानं शिक्षा कुरु सखा वर । कलकल्यानिवर्त
जा नमस्कृत्यानिधी ॥ ॥ ॐ नित्यकवृणा ॥ यायधना ॥ ॥ कृतका
विरामनूमादिन मद्यमखिलनिहितथावाणां युक्तिदश्यामि यवतयूनवक
वलयसुवविवाध शावकखड्गजिनारुम जिनसुगहृतानि कृगलानिभू
नूमादिगानि वाक्त्रेसम्यक्विनामना मद्यजिनवत्तादिकिरुयं मवर्तगताः
स्मिन् वरुणावनवाक्त्रेविरुविदधेनरुवमानेनथा एवत् ॥ ० ॥

ॐ नित्य आदियाग ॥ ॥ ॐ भेदी कवृणामदितायका वरुवक्रविरुवाः
रावयत् ॥ ॐ सखावपुत्रा सर्वधर्मासिखावपुत्रा इह पुन्यताकृतवक्र स्वः
रावात्मको इह ॥ यका वरुवायुमपुत्र नीलधन्वा रुचलत्यगा काकिर् ॥ न
स्यायवि लंकावाग्निमपुत्र शिक्षादीवर्कहालीकृर् ॥ न स्यायवि वका वृणाः
यमपुत्रं वरुत्तं एतं वामर्धेन कृर् ॥ न स्यायविलंका वरुयधिवीमपुत्रं व
रुवसुं यीर् नित्यवी कवृणा कृर् ॥ न इयविसंका वरुसुमर् वरुवसुं यरुः

महासूक्त कवचात्मिका ॥ आकिनीयगुथयामा खण्ड्याद
यवोदितयस्यसिना सर्वसिद्धियुक्तारिका ॥ कृष्ण ग्याम
गा चकवका चयुज्जा वामेखद्वान्गयार्थेच दक्षिणोष्ठम
का ॥ शिंभया मूककणा नन्ना आनीरासनस्त्रिगा वृक्षकव
दना यंचमूडाविरुचिगा ॥ विदिहयवत्वाया वाधिविरादिराधुका
चयुयुजावयस्त्रिगा भारुमाहादिविपुष्टिगा ॥ ॥ यथमश्निरुचः
भा

उं अक्षरं नीलवर्णनीलवक्त्रावलिङ्गिनिर्ण ॥ तस्ययवोदयं पूति
लमलय खण्डकपालिनं युवधुं ॥ उरुवजालंधं महाकंकालं
चण्डाक्षी ॥ यश्चिभडाठियानक कंकालं युक्तमणी ॥ दक्षिणोष्ठ
वृद्ध विकटदुष्टिर्ल महानासा ॥ आग्नेयां गार्गाया सुनावेविः
र्ल दीपमणी ॥ निम्बुत्पां वामेखद्वं अमिगारं खर्वी ॥ वायुयां
यवीकाट वज्रयुक्तं लंकवर्णी ॥ ॥ गीगायां मालव वज्रददः

दुम कृया ॥ ॐ ति वि रु च कं ॥ ॥ द्वितीय वाक्चक्र अष्टाव वक्रं
त्रय मावनि यविवृणा ॥ तस्य पूर्वदिशं कामवृथ अंकलिक
नेवावनी ॥ उरुचं डादियानं वक्रजटिलं महासेलवं ॥ यष्टिभः
वि शिगकनी महावीरं वायुवर्गा ॥ दक्षिण कागलार्था वक्रहं का
नं मलारुचयी ॥ अग्न्या कलिं ग सूरुदं ध्यामादवी ॥ मेमः
त्यां लयाकं वक्रयुक्तं सूरुदां ॥ वायुर्था कीवीयुधं महासेलवं द

यकलं ॥ ॐ गीगायां हिमालय विवृयाकं खगानना ॥ ॐ ति वाक्च
कं ॥ ॥ तृतीय वाक्चक्र अष्टाव वक्रं पुष्पवृक्षं वक्रावली यविवृणा ॥ त
स्य पूर्वदिशं यनसूर्यामहावर्तं वक्रवर्ग ॥ उरुचं पुद्गदवर्गायां व
त्रवर्तं खलुवाही ॥ यष्टिभः मोवाधु रुययीवं सोष्टिनी ॥ दक्षिण स
वर्तु दीय आकागगद वक्रवर्माती ॥ अग्न्या नगधं श्रीदवर्कः
सूवीवा ॥ मेमः सिको पमनस्यवदं महावला ॥ वायुर्था मवी

वेधावनं चक्रवर्तिनी ॥ ॐ नमो कृतार्था वरुणसु मदावी
र्या ॥ ॐ नमो कायचक्र ॥ ॥ स्वस्त्युक्त्या लक्ष्मीवीरा नकवक्र
वरुणुजाविभवा जयमकृतिनी अलिगलकुजधन वरुणधनु वामकुज
न स्वर्गांग दक्षिण (लक्ष्मीमूर्क यश्चमृदादिगाण अलीरासनस्थिता ॥ यः
यष्टादिमहादेया नकवक्रा विरुजा अलिगल कयालदसा दक्षिणावः
जकहिका विभवा भौद्वयिण्या मूर्ककणा अद्ययायागसमायन

दिगंवरा यंचमृदाविरुषिगा ॥ पूर्वदिचक्रुद्रा यश्च काकाण्या कृष्ण
उद्रकाण्या ग्यामा ग्यानास्यावक्रा शुक्राण्यायीना ॥ नकवक्रा वरुणः
जा वामकपाल स्वर्गांग दक्षिण उमवृकहिका यस्यालीरसवा
सना निवसना यश्चमृदा मृदिगा कयालवजावलीरुषिगा वि
भवा मूर्ककणा भौद्वयिण्या ॥ अग्न्यादि चक्रुद्रा (लक्ष्मी यमजारी
कृष्णयीना यमदूरीयीनवक्रा यमद्वष्टी वक्राण्यामा यममथनी

श्यामकृष्ण दोषोन्वयामनाहना एकवक्त्रावकुङ्कुजा वामकयाः
लखद्वांग दक्षिण उमबूकरिका यस्यालीरथमासना महाद्याः
ना यंचमुद्राविहृषिगाः कयालेवजावलीविहृषिगा ॥ विभूशामकः
कणा नोदप्रयिष्ठा ॥ वनयांसर्वथागिनीः सर्वसिद्धिप्रदायकाः
॥ ॥ नगाकवच ॥ उं हः नमः हरिः ॥ स्यादि ॥ ॥ समयं सत् कृतं
सत् भक्तलालित्यैरावयन् ॥ ॥ उं धाम गुह्यं सर्वधर्माः

योगगुह्यः ॥ आकर्षणं याथादि पूर्णनाग यूजा लाग्यासुति ॥
॥ ॥ नगा अरिषकं ॥ अरिषकं च चरुमां उं सर्ववीरथागिनी
यथा हि जातमाहं न स्नायिना सर्वतथागत सत्तार्हसनाययिष्ठा
मि गुह्यदिव्यगवाविताः उं आः सर्वतथागता रिषकसमयि
यद् ॥ अरिषकं महावज्रं उं भक्तुर्कनमस्तु न ददामि सर्ववृक्षानां
विभुमात्रयसमर्हव ॥ ॥ गि उदकारिषकं ॥ ॥ ॥ उदगं सर्ववृः

दानं यथाकंयुजनाथय मकटयंचक्रवाहव ॥ उं सर्ववृद्धय
तामनिमदा मकटयनिचक्रसादा ॥ उं वज्रवावाहि अलिषिचक्रं ॥
उं ताकिनी अलिषिचक्रं ॥ उं नामा अलिषिचक्रं ॥ उं यं गुवाहाः
अलिषिचक्रं ॥ उं त्रयिणी अलिषिचक्रं ॥ ॥ उं अयालिषिचक्रं
मसिवृद्धे वज्रनामालिषिककः ॥ ॐ दन्तं सर्ववृद्धत्वं गृह्णतु ॥
सुसिद्धये ॥ उं वज्राधियनिवा मलिषिचक्रं ॥ वज्रसमयस्त्वदा ॥

उं वज्रसत्ता मलिषिचक्रं मि वज्रनामालिषिककः ॥ उं ग्रीहं वृक अम
क वज्रनामालिषिककः ॥ ॐ त्रिपंचालिषिककः ॥ सुग
नस्त्वसमयाहं ॥ ॥ यं वादनमुनि ॥ ॥ गदन्कमत्रदिः
क्रुः ॥ यं गमलिः ॥ मदाताकिनी लामिकाखगुवाहा मनादाविहीनः
यिहीनियुतं ॥ को लस्येः कवाटकेः यत्रीनगं नः कायवाक्किरु
वक्रसुयागालसुसर्गवा विनिगत्तु यदीयवीयव्यत्री ॥ यकसच

किल । काक तु पुदिदवीरि व सञ्चित ॥ दिग्विदिक्कु सुस्तिगारिः स्वः
 दवीसमाप्त्यर्णगात्रिण । माययनायमकात्रविस्त्रिण । सत्वसः
 यागिनं द्वयविद्वयवाचर्ण कृष्णसंहाविर्ण मृत्युमात्रादित्रकासवा
 पीनया लमरुस्रविर्ण । विनीकेककुतास्तिनः ॥ वृद्धकायान्नर्णव
 ददवीसुखस्यार्ण संजातभागः कुर्यसंस्तुदिगाङ्ग । विनीकेककुता
 वृद्धकायान्नर्णव ददवीसुखस्यार्ण संजातभागः कुर्यसंस्तुदिगाङ्ग ।

दुर्जयानसुनद्वंद्वसनन्यसजाप्रामाद्य संवविदभादिन्कृत्रेवधि
 तं सूर्यकोटियुगायाविषा वायुदिग्मं लोलीकन मालचन्द्रा
 यकदंष्ट्रां कुरुसुवं श्रीकवंधीकवं यष्टिदं कुष्टिदं वाष्टदं सिद्धिदं
 सर्वसम्यक्कवनायकं वरुणाकं सदा ॥ ॥ मन्त्रगर्थाणि ॥
 ॐ तिमं तुलद्वितीयथाग ॥ ० ॥ अथकायथागं सुवयं ॥ ॥
 पूर्विलमयं सिवसि यवतुं जालंध्रवर्जिखायां वन्दाक्षी । ॐ

डिया न दक्षिण कर्ण परामति ॥ अद्वयं मरुतं यष्टुः
मरुतामा ॥ ॐ नित्यं दुःखी ० पुमदि नारुमि ॥ ॥ गम
वलि वाम कर्ण विवमनी वाम श्वव कुममध्व खर्वनी
दवकाट चक्षुषा लंक श्ववी मालव कश्चदय कुमकाया ॥
ॐ नित्यं दुःखी ० विमलाहमि ॥ विरुचक श्ववनी ॥ ॥ का
मरुकाया नेलावनी डाडधून रुगव मरुताहेलवी ॥ ॐ

नित्यं दुःखं यष्टुकावीहमि ॥ ॥ विमलानि नारी वायव
गम ॥ कासव नामिकाय सुवारुकी ॥ ॐ नित्यं दुःखं नदय
अविमलमिहमि ॥ कलिग मुख ग्यामादवी वैयाक कं
० सरुदा ॥ ॐ नित्यं दुःखं अविमलमिहमि ॥ ॥ का
त्रि दुःखं दयक ॥ हिमावयमध्व खगनना ॥ ॐ नित्यं
दुःखं नदय सरुदाहमि ॥ ॥ वाक्वक्वुववि ॥

युक्तयुक्तिग चक्रवर्ग गुह्यद्वारा गुह्य खलुगोदा ॥ ॐ
निमलायकदय इलंगमारुमि ॥ ॥ सोनाथ डवृद्धयः
सोदनी सवर्णदीय अंघाया चक्रवर्मनी ॥ उयमलायक
दय अवनारुमि ॥ ॥ नगव अगरीष सुविवा सिद्धपाद
युष्ट महावला ॥ ॐ निगमज्ञानदय साधुमनीरुमि ॥ ॥ भव
अंगुष्ठयाचक्रवर्णी कलगाजानदय महाविद्या ॥ ॐ नि

उयमज्ञानदय धर्ममघारुमि ॥ ॥ कायवर्क यागाववासि
नी ॥ ॥ ॐ निवर्तुर्विगतिपी ० मगानरुमि ॥ ॥ नखदक
या खलु कयावीन ॥ कसलामया महार्ककाव ॥ त्वकमत्रक
कात्रमाथा विकटद्विष्टः स्नाय सवावेत्रिणी ॥ अस्ति अमिः
गारु ॥ वृक्त वरुप्ररु ॥ ददय वरुदरु ॥ वरुषि अंकलिक ॥
पीग वरुजगित ॥ रुरुस महावीर ॥ अरु वरुदकाव ॥ गु

सवति गुरुद ॥ इदं वरुदं ॥ पुलिष महारुववः ॥
सिमान विवपाक ॥ ग्लान महारुल ॥ ययवत मरुव ॥
लाहित रुययीव ॥ यस्वदं आकागगरु ॥ मृद श्रीरुवक ॥
अशुयमनृख्यव ॥ खट वेवावन ॥ सिहानक वरुसव ॥
ववंविवाग विगुदि ॥ मूरु काकासा ॥ वामनासायुट उल
कासा ॥ गुडदाय ग्वानासा ॥ दक्षिण नागायुट गुकवासा ॥

गद्य (ग्रान यमठाटी ॥ वाम (ग्रान यमद्वी ॥ सव नरु य
मद्वी ॥ वाम नरु यममथनी ॥ धर्म वरुद दय ठाकिनी ॥
सभुगचक क(ठ लामा ॥ निर्माणचक नासी खगुवाहा ॥
महासखचक ललाने वृषिणी ॥ इल्लीषव (श्रीरुवक वरु ॥
नासी अकाव ॥ रुदय हुकाव ॥ क(ठ उंकाव ॥ सिवसि हु
काव ॥ निवृष्णसं रावयु ॥ ॥ आकथनी यायादि पूजा लासा